12 दैनिक जीवन में भूगोल

तपस्या साहा



कभी–कभी मैं सोचती हूँ कि ओलम्पिक, फीफा और यहाँ तक कि आईपीएल भी भूगोल सिखाने का एक स्वाभाविक तरीका है।

एक दिन जब मैं पैदल अपने घर वापस जा रही थी तब मैंने एक युवा माँ और उसकी सात/आठ साल की बच्ची के बीच का संवाद सुना। उनके आगे दो अफ्रीकी युवक चल रहे थे, जिन्हें देख कर छोटी बच्ची ने अपनी माँ से पूछा, 'माँ इन आदमियों के बाल कुण्डलियों की तरह घुंघराले क्यों होते हैं, हमारे बाल तो ऐसे घुंघराले नहीं होते?' माँ ने बिना कुछ सोचे जवाब दिया, ''सभी अफ्रीकियों के बाल ऐसे ही होते हैं।'' उस माँ का उत्तर बच्चों द्वारा किए जाने वाले ऐसे सभी प्रश्नों, सभी चीज़ों पर जो वे अपने आस–पास देखते हैं तथा अपने स्वयं के मानसिक आकाश में अपने ढंगों से सीखते हैं, पर एक प्रहार था। मुझे उस लड़की को उत्तर देने का बहुत मन था क्योंकि वह प्रश्न एक भौगोलिक प्रश्न था।

भूगोल कहाँ है?

मेरे लिए भूगोल जीवन जीने का एक ढंग है; हम सभी के लिए दिन की यात्रा शुरू होती है पूर्व दिशा में सूर्य के उगने के साथ। बच्चा यह बात पहले से ही जानता है। उसे पता है कि सूर्य प्रतिदिन पश्चिम में अस्त होता है। इसी प्रकार वह सभी ऋतुओं, ओणम, पोंगल, वनस्पति, भूमि संरचनाओं, सुनामी, तापमान, भोजन की आदतों, संस्कृति, कपड़ों के प्रकार, कुछ बीमारियाँ जो स्थानीय तौर पर पाई जाती हैं और कुछ नहीं, इन सभी के बारे में जानता है लेकिन उसे इनके भौगोलिक सम्बन्ध ज्ञात नहीं हैं।

मेरा मानना है कि मातृभाषा के अलावा भूगोल ही ऐसा अन्य विषय है जिसे सीखने की बच्चे में स्वाभाविक क्षमता होती है। वह अपनी सारी जिन्दगी भूगोल को निरन्तर सीखता है। आइए हम कुछ ऐसे प्रश्नों को परखें जिन्हें चार वर्ष से चौदह वर्ष की आयु तक का कोई बच्चा पूछ सकता है।

- मम्मी, यदि पृथ्वी एक गोल गेंद के समान है तो हम उससे गिर क्यों नहीं जाते?
- क्या सान्ता ब्राजील में उतने ही आराम से रह सकता है जितना की मंगोल में?
- मम्मी, अरब लोग 'थूब' क्यों पहनते हैं, और पापा क्यों नहीं पहनते?
- यदि अप्रैल – मई इतना गर्म होता है, तो दिसम्बर गर्म क्यों नहीं होता?
- मैं केरल में सूती कपड़े क्यों पहनती हूँ, ऊनी फ्रॉक क्यों नहीं?
- पुणे की अपेक्षा दिल्ली में दोपहर के समय मुझे कोई परछाई थोड़ी लम्बी क्यों दिखाई देती है?
- लोग ऐसा क्यों कहते हैं कि मानसून आता और जाता है, तो वह रहता कहाँ है?
- क्या दिसम्बर में मेरे जन्म दिन के लिए कृपया हम कुछ आम बचा सकते हैं?
- चन्द्रमा कैसे बढ़ता और घटता, पूर्ण रूप से प्रकट होता और विलोपित हो सकता है?
- सूर्य सुबह से लेकर शाम तक घूमता रहता है, और फिर भी हमेशा वही का वही रहता है?
- चेन्नई में केवल ही एक ही मौसम क्यों रहता है, जबकि अगरतला में सभी चार मौसम होते हैं?
- हम गर्मियों में पहाड़ों पर, और सर्दियों में समुद्री तटों पर क्यों जाते हैं?
- कुछ लोगों को छोले–भटूरे और कुछ को इडली–साँभर क्यों अच्छे लगते हैं?
- अमेरिका में चिकन पॉक्स या यलो फीवर के बारे में क्यों नहीं सुना जाता है?
- क्या एक इन्द्र धनुष मेरी पहनने वाली चूड़ी की तरह कभी गोल हो सकता है?
- हिमपात देखने के लिए मुझे हिमालय क्यों जाना पड़ता है? उसे मैं हैदराबाद में क्यों नहीं देख सकती हूँ?
- सूर्य, सूर्यास्त के पश्चात पूर्व में उदित होने के लिए कितनी तेजी से दौड़ता है?
- क्या ठण्ड में कोहरा और धुन्ध बनाने के लिए बादल नीचे नहीं आते?
- नीम के पेड़ के बजाय देवदार के वृक्ष घण्टी के आकार के क्यों होते हैं?
- यहाँ पर हमें हिरण और बाघ देखने को मिलते हैं, पर क्रिल और किवी क्यों नहीं?
- विमान चालक आकाश में विमान कैसे उड़ाता है और कभी अपनी दिशा नहीं खोता?

- इन सभी प्रश्नों और ऐसे कई और प्रश्नों के उत्तर मुझे कहाँ मिलेंगे?

मुझे यकीन है कि दादा–दादी, माता–पिता और शिक्षक अपने अनुभवों के आधार पर इनमें से कई प्रश्नों के उत्तर दे सकते हैं। उनसे मिले उत्तर बच्चों के लिए बहुत विश्वसनीय और स्वीकार्य होते हैं। कुछ प्रश्नों को समझाने के लिए स्पष्टीकरण और अन्य चीजों के ज्ञान तथा अवधारणाओं की आवश्यकता हो सकती है। आइए हम कुछ उत्तर सुझाने वाले प्रश्न पूछें और बच्चे को अपने स्वयं के उत्तर ढूँढने में उनकी मदद करें।

हम पहले प्रश्न को लें, 'माँ यदि पृथ्वी एक गोल गेंद के समान है तो हम उससे गिरते क्यों नहीं?' वास्तव में हम एक फुटबॉल ले सकते हैं और उस पर एक चींटी को रख दें, उसे उस पर चारों ओर घूमने दें, इसे बच्ची को दिखाएँ और पूछें कि क्या चींटी उस पर से गिर जाएगी या उस पर आराम से रह सकती है; बच्ची को गेंद घुमा कर खुद देखने के लिए कहें।

दूसरा उदाहरण लें, 'मम्मी अरब लोग 'थूब' क्यों पहनते हैं और पापा क्यों नहीं पहनते?' उसे अपना उत्तर स्वयं ढूँढने में मदद करने के लिए हम उससे पूछ सकते हैं कि वह कपड़े, स्वेटर, जूते आदि क्यों पहने हुए है, या उसे गर्मी की दोपहर में छाते की जरूरत क्यों पड़ती है?उसका उत्तर हो सकता है – अच्छा दिखने के लिए, गर्म रहने के लिए, धूप से बचाव के लिए आदि। इसमें हम धूल या रेत से बचाव का विचार भी शामिल कर सकते हैं। मुझे यकीन है कि वह इससे सहमत होगी। इसमें हम और जोड़ सकते हैं कि अरेबिया एक धूल भरी, रेतीली और गर्म जगह है; फिर उससे पूछें कि क्या इस तरह की जगह में धूप में बाहर निकलते वक्त शरीर को सिर से पाँव तक ढँकना क्या एक अच्छा विचार नहीं होगा।

हम इस जगह पर रुक सकते हैं और बच्ची को अपना ज्ञानवर्धन स्वयं करने दें जो कि उम्र के अनुरूप तथा अर्थपूर्ण होता है। सबसे बड़ी बात यह कि इसमें किसी प्रकार के रटने की आवश्यकता नहीं होती।

मातृभाषा के समान ही बच्चा बिना किसी पक्षपात और बिना ज्यादा प्रयास के अपने इलाक़े के आसपास का भूगोल निर्मित करता है; यहाँ पर यदि किसी चेतन प्रयास की आवश्यकता है तो वह है मार्गदर्शन की। सहायक व्यक्ति उत्तर की ओर इशारा करने वाले प्रश्न पूछकर और उनके उचित उत्तरों को देकर बच्चे की सोच प्रक्रिया को तार्किक रूप से उसकी प्रारम्भिक कक्षाओं से आगे बढ़ा सकते हैं, जिससे कि वह चिन्तन, अवलोकन, पुष्टिकरण, वैधीकरण, समझ, सम्बन्ध स्थापित करने आदि की क्षमताएँ भी विकसित कर सके।

भूगोल की शिक्षक होने के कारण मैंने लगभग हमेशा पाठों को कक्षा में पाई जाने वाली सामग्री से, जैसे मेरी पहनी हुई साड़ी, विद्यार्थियों की ऊँचाई, त्वचा के रंग, उनके बस्ते में मौजूद चीजों, उनके द्वारा लाए गए भोजन तथा चॉक और बोर्ड आदि से जोड़ा है। मैं विशेष रूप से जलवायु के बारे में पढ़ाने के दौरान छात्रों को उस समय कक्षा से बाहर जैसा अनुभव हो रहा हो, उससे सम्बन्धित विषयों जैसे आकाश, वायु, तापमान, बादल, वर्षा को भी शामिल किया करती थी। भूगोल हमेशा रोजमर्रा के जीवन से जुड़ा रहता है; जीवन के अनुभवों और उनके पीछे की भौगोलिक अवधारणाओं के बीच मौजूद कड़ी या सम्बन्ध को पहचानने या देख पाने की बच्चे की मानसिक क्षमता को विकसित करने के लिए आवश्यक मदद या कौशल प्रदान करना ही शिक्षक का कार्य होता है ।

भूगोल की शिक्षक होने के कारण मैंने लगभग हमेशा पाठों को कक्षा में पाई जाने वाली सामग्री से, जैसे मेरी पहनी हुई साड़ी, विद्यार्थियों की ऊँचाई, त्वचा के रंग, उनके बस्ते में मौजूद चीज़ों, उनके द्वारा लाए गए भोजन तथा चॉक और बोर्ड आदि से जोड़ा है।

शिक्षाविद् कृष्णकुमार दृढ़तापूर्वक यह मानते हैं कि संवाद, बच्चों के बीच, सीखने के लिए बहुत ही प्रभावशाली औजार है। बच्चे जब कोई नई वस्तु देखते हैं, फिर चाहे वह एक इल्ली हो, एक पतंगा हो, या नई जगह हो, या वे कोई फिल्म देखते हैं या कोई पुस्तक पढ़ते हैं तो वे उसे दूसरों को बताते हैं। यहाँ पर दोनों ही पक्ष कुछ सीख रहे हैं। मित्रों की आपस में बातचीत बच्चों को सीखने में मदद करती है, विशेषकर जब संवाद छुट्टियों के बाद हो; क्योंकि हो सकता है कि बच्चे छुट्टियों में अलग–अलग जगहों पर घूमने गए हों और वहाँ से नए–नए अनुभवों और अवलोकनों के साथ लौटे हों, ये अनुभव जब उनमें आपस में बाँटे जाते हैं तो सुनने वालों को इन जगहों की कल्पना करने में मदद करते हैं और उन्हें अपने बल पर सीखने के लिए प्रेरित करते हैं। यहाँ पर शिक्षक बच्चों के द्वारा लाई गई तस्वीरों, नक्शों, चित्रों आदि का उपयोग करके उनके ज्ञान को मजबूत बना सकते हैं।

बड़े बच्चों के पास विचरण करने के लिए व्यापक मानसिक क्षेत्र होता है; उनके सामने ज्ञान बढ़ाने के कई साधन होते हैं जैसे अख़बार, टीवी चैनलें, फिल्में, गाने, कहानियों की किताबें, पर्यटन, लम्बी पैदल यात्राएँ आदि। जब प्रत्येक अनुभव को जोड़ा जाता है

तो एक विशाल संसाधन भण्डार उत्पन्न हो जाता है।

क्या जीवन को बेहतर तरीके से जीने के लिए भूगोल की अवधारणाओं को सीखने की वास्तव में जरूरत है? क्या ये अवधारणाएँ हमें हमारे दैनिक जीवन में मदद करती हैं? या इस तरह पूछा जाए कि क्या वे एक प्रकार का जीवन–कौशल हैं? क्या हमारे बच्चों को इस कौशल को पैना बनाने की आवश्यकता होती है?

क्या इन अनुभवों, जो वास्तविक जीवन में होने वाली घटनाओं पर आधारित, उनसे निकले या बँधे होते हैं, या व्यक्ति के जीवन को सीधे प्रभावित कर रहे होते हैं, को भी भौगोलिक अनुभव कहा जा सकता है? क्या जीवन के कौशल के रूप में, भौगोलिक अवधारणाओं के हमारे ज्ञान की जीवित रहने के लिए, जीवन का आनन्द उठाने के लिए, रोजमर्रा के जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए, निर्णय लेने के लिए, अन्य विषयों को समझने के लिए, हमारे आसपास होने वाली घटनाओं को समझने के लिए, और उससे अपनी जीविका चलाने के लिए बहुत जरूरत नहीं होती? इनमें से अधिकांश प्रश्नों का उत्तर एक शब्द 'हाँ' में दिया जा सकता है।

यह लेख लिखते समय मैंने अपनी ननद से 'भूगोल' विषय के बारे में पूछा, नित्य प्रतिदिन के जीवन में भूगोल के महत्व के बारे में उसकी राय पूछी। हालाँकि वह एक बैंक कर्मचारी है और उसने गणित पढ़ा है, बैंक में जमा धनराशि में वृद्धि करवाने की तरकीबें तो उसके बायें हाथ का खेल हैं, लेकिन भूगोल में कतई उसकी गति नहीं है। मज़े की बात यह है कि जैसे ही मैंने उससे यह प्रश्न पूछा, उसने बिना किसी हिचकिचाहट के ऐसे जवाब दिया जैसे वह काफी समय से इस सवाल के पीछे पड़े हुई थी और पहले ही किसी निष्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। उसने कहा, ''यदि मुझे पता होता कि आज की जीवनशैली, समस्याओं, संसार की स्थिति को समझने के लिए भौगोलिक अवधारणाओं को समझना इतना जरूरी होगा तो मैंने अपने स्कूल के दिनों में इसमें अधिक रुचि ली होती और निश्चित रूप से मैं आज ज्यादा काबिल होती। अब समस्या को ठीक ढंग से समझ पाना मेरे लिए कठिन कार्य होता है।''

इस संवाद से हम क्या निष्कर्ष निकालते हैं?

मेरे मित्र के बेटे को भूगोल रुचिकर लगता था और कई बार हमने भूगोल की विभिन्न अवधारणाओं पर चर्चा की और तर्क–वितर्क किया; एक बार यह चर्चा अक्षांश और देशान्तर तथा उसकी जरूरत पर हुई। कई वर्षों बाद वह एक सुन्दर नौजवान विमान चालक के रूप में मुझे मिला । जब हम साथ बिताए हुए समय की याद ताजा कर रहे थे तो उसने मुझे बताया कि किस प्रकार अक्षांश और देशान्तर की अवधारणा ने उड़ने के दौरान किसी जगह की स्थिति को समझने में उसकी मदद की। इससे मैंने खुद भी सबक सीखा कि किसी बच्चे को जिज्ञासु बनाना कितना जरूरी है।

क्या आजकल के भूगोल का पाठ्यक्रम बच्चे को सीखने में मदद करता है?

मेरे विचार से यहाँ हमें विशेष रूप से दो क्षेत्रों में कुछ बदलाव करने की आवश्यकता है.:

- विषयवस्तु
- उस विषयवस्तु को हम जिस तरीके से सुगम बनाते हैं

चलिए हम यह मान लेते हैं कि बच्चे पहले से ही बहुत सारी चीजें जानते हैं, और वे चीजों को विकसित करने, जोड़ने, परिवर्तित करने, परिष्कृत करने, अनुमान लगाने, समझने और कल्पना करने की स्थिति में होते हैं। तब सहायकों के रूप में हमें उनके मौजूदा मानसिक ढाँचे में और वृद्धि करने की जरूरत होती है। चलिए हम इससे शुरुआत करें कि वे क्या जानते हैं, और फिर उन्हें इस प्रकार के योगदान दें जो उन्हें अनुभवों के जरिए सीखने में मदद करें। उदाहरण के लिए, कक्षा 1,2,3,4 में ग्लोब की अमूर्त धारणा समझना तथा घूर्णन और परिक्रमण के सिद्धान्तों, और इन गतिविधियों के 'रात और दिन' के होने से, या 'मौसमों' के होने से सम्बन्ध को समझना कठिन होता है। इसके बजाय, हम उनसे उनके पहले से मौजूद ज्ञान, जैसे पूर्व और उगते सूर्य, पश्चिम और डूबते सूर्य, दिन के दौरान सूर्य की अलग–अलग स्थितियों और बच्चों की परछाईयों की विभिन्न लम्बाइयों, सूर्य की बदलती स्थिति के साथ तापमान में अन्तर आदि को ध्यान में रखने के लिए कह सकते हैं। और फिर बड़ी कक्षाओं में इसी जानकारी को ग्लोब, घूर्णन, परिक्रमण आदि के तथ्यों से जोड़ा जा सकता है।

आइए हम किसी बच्चे को दिए गए पते की सहायता से एक मकान ढूँढने में मदद करें:

मकान नं. 5 बी, फर्स्ट मेन, पाई लेआउट

आइए उससे पूछते हैं कि इस जानकारी के कौन से दो हिस्से डाकिए को घर ढूँढने के लिए दिए गए हैं। उसका उत्तर हो सकता है कि मकान का क्रमांक (5बी) और सड़क (फर्स्ट मेन, पाई लेआउट)। अब हम उससे पूछते हैं कि यदि वह डाकिया होती तो वह क्या करती? सड़क और मकान का क्रमांक दिखाने के लिए एक सरल चित्र बना कर उसकी सहायता करें। उन दो सन्दर्भों को रेखांकित करें जिनकी उस जगह को ढूँढने में जरूरत है। (यहाँ

सन्दर्भ मकान का क्रमांक और सड़क का नाम हैं)। फिर अगले सत्र में हम ऐसी दो सन्दर्भ रेखाओं को अक्षांश और देशान्तर के रूप में ग्लोब पर अंकित कर सकते हैं और फिर अक्षांश और देशान्तर की सहायता से किसी शहर की स्थिति बता सकते हैं।

नेत्रा और प्रीतम को त्रिकोण आकार के 'अलाइवा' बिस्किट खाना अच्छा लगता है; अब नेत्रा जब भी किसी त्रिकोणाकार वस्तु को देखती है तो वह उसे 'अलाइवा' बुलाती है और जब प्रीतम 'अलाइवा' बिस्किट को देखता है तो वह उसे 'त्रिकोण' कहता है। असल में दोनों ने आकार को पहचान लिया है भले ही उसका वर्णन करने के लिए सही नाम लिया हो या न लिया हो। दोनों ही के पास अपने वास्तविक अनुभवों के आधार पर त्रिकोण की धारणा थी, अतः जब बच्चा कहता है कि 'अलाइवा' एक 'त्रिकोण' है तो शिक्षक समझा सकता है कि 'हाँ अलाइवा एक त्रिकोणाकार बिस्किट है, और इसी प्रकार पहाड़ की चोटी या क्रिसमस का पेड़ भी, अतः वे सभी 'त्रिकोण' कहलाने वाली श्रेणी से सम्बन्ध रखते हैं।

कोई बच्चा अपने आसपास की चीजों या अपने चारों ओर के संसार के बारे में कैसे सीखता है?

बच्चे छूने, खाने, प्रयोग करने, अवलोकन करने, नकल करने, पूछने आदि गतिविधियों के द्वारा सीखते हैं। 'रचनात्मकतावाद' का सिद्धान्त कहता है कि ये आधार रूपरेखाएँ होती हैं; सीखने वाले व्यक्ति इन अनुभवों के आधार पर जिन्दगी भर अपने ज्ञान को बढ़ाते रहते हैं। शिक्षक को ऐसी परिस्थितियों का ध्यान रखने की आवश्यकता होती है जिनका वह अपने विद्यार्थियों को इसलिए अनुभव करवाना चाहता है कि वे अपना स्वयं का ज्ञान निर्मित कर पाएँ। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 ने इन उद्देश्यों को पहचाना है। अब सवाल यह है कि शिक्षक इसके लिए किस प्रकार काम करते हैं?

बच्चे अपना ज्ञान निर्मित कर पाएँ इसके लिए शिक्षक को क्या करना चाहिए?

'सवाल पूछना' एक बहुत ही मजबूत हथियार है जिसका इस्तेमाल शिक्षक द्वारा किया जा सकता है। 'क्यों' से पूछे जाने वाले सवाल सीखने वालों की ओर से किसी बात का 'कारण' या 'व्याख्या' जानने के लिए अनुरोध हो सकते हैं। कारण बताना और व्याख्या करना एक ही बात नहीं होती। कारण विश्वासों या धारणाओं को कायम रखने के लिए या किसी चीज को सत्य मानने के लिए दिए जाते हैं। व्याख्या प्रकृति के प्रवाह में होने वाली घटनाओं और प्रक्रियाओं को समझाने के लिए होती है, जैसे ''केवल कुछ पहाड़ की चोटियाँ ही क्यों बर्फ से ढँकी होती हैं सब नहीं?'' या ''हमें नामधपा, अरुणाचल में तब (स्थानीय समय प्रातः 5 बजे) सूर्योदय का अनुभव क्यों होता है जब द्वारिका, गुजरात में उस समय (स्थानीय समय प्रातः 3 बजे) बहुत अँधेरा होता है?''

यहाँ पर व्याख्या करने में सिद्धान्तों और नियमों दोनों का प्रयोग होता है। कभी–कभी शिक्षक को प्रक्रिया का संक्षिप्तीकरण करना पड़ता है, अर्थात पहले घटनाओं की व्याख्या करना और फिर उनके नियमों की व्याख्या करना। उदाहरण के लिए:

1. सवाना को 'पार्क लैण्ड' क्यों कहा जाता है?

   क्योंकि इस प्राकृतिक घास के मैदान में कहीं–कहीं कुछ पेड़ उगे रहते हैं जैसा एक बगीचे में होता है।

2. आर्टिसन कुओं की क्या खासियत है?

   आपको ऐसे कुएँ में से पानी निकालने की जरूरत नहीं होती, पानी अपने–आप बाहर आता है।

3. सहारा एक रेगिस्तान क्यों है?

   क्योंकि इस क्षेत्र में बहुत कम वर्षा होती है।

ये ऊपरी तौर पर दिखाई देने वाली व्याख्याएँ हैं। इनमें से किसी भी उत्तर में हम वास्तविक प्रश्न की जड़ में नहीं गए हैं, जैसेः सवाना को पार्क के मैदान जैसा दिखाई देने के लिए उसमें थोड़े से ही पेड़ क्यों उगते हैं, (पहले प्रश्न में); पानी बाहर निकाले जाने के बजाय क्यों अपने–आप बाहर आ जाता है, (दूसरे प्रश्न में); और सहारा में ज्यादा वर्षा क्यों नहीं होती (तीसरे प्रश्न में) इन प्रश्नों पर कभी ध्यान नहीं दिया गया है।

> *आजकल के जीवन को जीने में भूगोल एक धुरी का काम करता है; अब जीवन का अधिकांश भाग हम स्वयं के अनुभवों से सीखते हैं, अतः इसमें अधिक समय लगता है। काश कि स्कूल या शिक्षक हमारे भीतर इसका कौशल निर्मित कर सकते, तब अन्य चीजों के साथ–साथ हमारे लिए ऐसे निर्णय लेना, कि कहाँ रहना है, कहाँ घर निर्मित रहना है, कौन सा फ्लैट चुनना है, डीजल कार खरीदनी है या पेट्रोल कार, आदि भी आसान हो गया होता।*

शिक्षक को व्याख्यात्मक सिद्धान्त का इस प्रकार से इस्तेमाल करना चाहिए कि उसमें भविष्य में देखने की शक्ति हो ताकि बच्चे उसके आधार पर ठीक–ठीक पूर्वानुमान लगा पाएँ। यह जानते हुए कि

जमीन की तुलना में पानी धीमी गति से ठण्डा और गर्म होता है, बच्चे यह पूर्वानुमान लगा सकते हैं कि समुद्र तट पर जलवायु मध्यवर्ती रहेगी।

इसी प्रकार आर्टिसन कुएँ उस क्षेत्र में सीमित हैं जहाँ चट्टानी संरचनाएँ तश्तरी के आकार की हैं और उन पर जल का दबाव आसानी से पड़ता है। इस तरह छात्र यह समझ सकते हैं कि ऐसी संरचनाओं में खोदे गए कुओं से पानी स्वयं के दबाव के कारण बाहर निकल आएगा।

क्या हम भूगोल की ऐसी कक्षा के बारे में नहीं सोच सकते जो खुले में लगाई जाए? शिक्षक और स्कूल को इस बारे में पहले से ही योजना बनाना पड़ेगी जिसमें कुछ विषयों को एक साथ मिला दिया जाए (मिट्टी, मिट्टी का क्षरण, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि, लोगों का व्यवसाय आदि), और कभी–कभी विज्ञान और भूगोल की कक्षाओं को (सौर मण्डल, खनिज) एक साथ मिला दिया जाए। कुछ विषयों जैसे मौसम और जलवायु को पूरे वर्ष के दौरान अलग–अलग ऋतुओं के अनुसार पढ़ाया जा सकता है, जल्दबाजी की जरूरत क्या है?या दो ऋतुओं को कक्षा 6 में और दो ऋतुओं को कक्षा 7 में पढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा सामूहिक गतिविधियाँ भी हो सकती हैं, जैसे फिल्म देखना, यात्रा विवरण पढ़ना, अवधारणा का मानचित्रण। बच्चे जिन प्रसंगों (टॉपिक्स) को सीखना चाहते हों उनके आधार पर वे अपना पाठ्यक्रम खुद बना सकते हैं। कुछ प्रसंगों को वे खुद या उच्च कक्षा के विद्यार्थी पढ़ा सकते हैं। सम्बन्धित प्रसंगों पर नवीनतम पुस्तकों में से चुने गए पाठ्यांशों का कक्षा में, या पुस्तकालय की कक्षा में समावेश किया जा सकता है। सम्बन्धित प्रसंगों पर अखबार में से काटी गई जानकारियों का इस्तेमाल करते हुए एक संकलन पुस्तिका बनाना भी सीखने का अच्छा स्रोत हो सकता है।

आजकल के जीवन को जीने में भूगोल एक धुरी का काम करता है; अब जीवन का अधिकांश भाग हम स्वयं के अनुभवों से सीखते हैं अतः इसमें अधिक समय लगता है। काश कि स्कूल या शिक्षक हमारे भीतर इसका कौशल निर्मित कर सकते, तब अन्य चीजों के साथ–साथ हमारे लिए ऐसे निर्णय लेना, कि कहाँ रहना है, कहाँ घर निर्मित रहना है, कौन सा फ्लैट चुनना है, डीजल कार खरीदनी है या पेट्रोल कार, आदि भी आसान हो गया होता।

इन सभी के लिए तथा इस ग्रह पर 'जीवन' की धड़कन को बनाए रखने के लिए भूगोल की आवश्यकता होती है।

तपस्या साहा *औद्योगिक भूगोल में डॉक्टरेट हैं। वे बंगलौर व कोलकाता में भूगोल की अध्यापिका रही हैं। वे टाइम्स ऑफ़ इंडिया के 'न्यूज़ इन एजुकेशन' के एक खण्ड 'माइण्ड फील्ड' से भी जुड़ी हुई हैं। आजकल वे अकादमिक और अध्यापन कला के विशेषज्ञ के रूप में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ जुड़ी हुई हैं। उनसे इस* tapasya@azimpremjifoundation.org *ईमेल पते पर सम्पर्क किया जा सकता है।*